१ ओअंकार (१ओ) सति गुर प्रसादि

सनातन धर्म और गुरमत

तुल्नातमिक धर्म अध्ययन

>< >< >< >< >< >< >< >< >< >< ><

मूल रूप में

सिक्ख मिशनरी कॉलेज (रजि.)
लुधियाना द्वारा प्रकाशित पुस्तक

क्रांतिकारी जगत् गुरू नानक देव चैरिटेबल ट्रस्ट, चण्डीगढ़

लॉन्च करता : जसबीर सिंघ
Mob. : 099881-60484, 62390-45985

Type Setting : Radheshyam Choudhary
Mob. : 098149- 66882

Download Free

सनातन धर्म और गुरमत

सनातन का अर्थ है बहुत पुराना अथवा अनादि काल का। अत: मौलिक हिंदू धर्म को सनातन धर्म कहा जाता है। इस में वेदों, शास्त्रों के आधार पर बने धर्म के मुख्य लक्षण और उनके बारे में सिख धर्म के विचार अंकित किए जाते हैं:

(1) **वेदों का प्रभुत्व :** सनातनी धर्म में वेदों को सर्वोत्तम धर्म पुस्तक माना गया है। यह हिंदू धर्म का आधार हैं। हिंदुओं का नया संप्रदाय आर्य समाज आज भी वेदों का बहुत जोर-शोर से प्रचार कर रहा है। पहले हिंदुओं का विश्वास था कि जो मनुष्य वेदों को मानते हैं वे आस्तिक हैं और जो वेदों को नहीं मानते वे नास्तिक हैं। प्राचीन मतों का भी इसी आधार पर निर्णय किया जाता था। बुद्ध मत, जैन मत और चारवाक मत क्योंकि वेदों के प्रभुत्व को नहीं स्वीकार करते, इसलिए प्राचीन हिंदू विद्वान इन मतों को नास्तिक मत कहते रहे हैं।

सिख धर्म वेदों के प्रभुत्व को नहीं स्वीकार करता बल्कि वेदों के विचारों, देवी देवताओं की पूजा, प्राकृतिक शक्तियों की पूजा, यज्ञों, बलि देने और वरण भेद के आश्रम धर्म आदि का खुल कर विरोध करता है। सिख धर्म एक प्रभु में विश्वास और नाम सुमिरन (प्रभु का स्तुति-गायन) करने पर सब से अधिक बल देता है जब कि वेदों में प्रभु (अकाल पुरख) के अस्तित्व के बारे में बहुत ही कम (न होने के बराबर) विचार दिए गए हैं। वेदों और सनातन धर्म की अन्य पुस्तकों, शास्त्रों, स्मृतियों आदि के बारे में गुरू ग्रंथ साहिब जी में इस प्रकार के फुरमान हैं :

बेद कतेब सिम्रित सभि सासत, इन्ह पढ़िआ मुकति न होई । (सूही महला 5, पृष्ठ 747)

यथा

–बेद कतेब इफरता भई, दिल का फिकरु न जाए ।। (तिलंग कबीर जी, पृष्ठ 727)

यथा

– पढ़ पढ़ पंडित मोनी थके, वेदां का अभिआस ।।

हरिनामु चिति व आवई, नह निज घरि होवै वासु ।। (मलार महला 3, पृष्ठ 1277)

सिक्ख धर्म में, गुरबाणी के बीच आए विचारों व सिद्धांतों को ही अंतिम सत्य माना गया है:

सभसै ऊपरि गुर सबदु बीचारु ।।

होर कथनी बदउ न, सगली छारु ।। (रामकली महला 4, पृष्ठ 1277)

यथा

– सतिगुर की बाणी, सति सति का जाणहु गुर सिखहु,

हरि करता आपि मुहहु कढाए ।। (गउड़ी वार, महला 4, पृष्ठ 308)

देवी – देवताओं के अस्तित्व में विश्वास : सनातनी धर्म में कुचली शक्तियों को देवी देवताओं के रूप में कल्पित करके उनकी पूजा का रिवाज रहा है। अग्नि सूर्य वर्षा (इंद्र) वरुण, ऊषा आदि अनेकों ही देव माने गए हैं – श्री राम चंद्र व श्री कृष्ण इन में ही आते हैं। विश्वकर्मा, गणेश, ब्रहस्पति, सोम, दिती, अदिती, सरस्वती, सवित्री, पार्वती, दुर्गा, वैषण देवी आदि की पूजा भी की जाती है।

सिक्ख धर्म में देवी देवताओं में विश्वास रखने और उन की पूजा का जोरदार खंडन किया गया है। केवल एक अकाल पुरख की स्तुति गायन का उपदेश दिया गया है :

– माइआ मोहे सभ देवी देवा ।। (गउड़ी महला 3)

यथा

– ब्रहमा बिसनु महादेउ त्रै गुण रोगी, विचि हउमै कार कमाई ।।

जिनि कीए तिसहि न चेतहि बपुड़े, हरि गुरमुखि सोझी पाई ।। (सूही महला 4, पृष्ठ 735)

यथा

– ब्रहमा बिसनु महेसु न कोई ।। अवरु न दीसै ऐको सोई ।। (पृष्ठ 1035)

यथा

– जउ जाचउ तउ केवल राम ।। आन देव सिउ नाही काम ।। (भैरउ कबीर जी पृष्ठ 1162)

(3) वरण आश्रम धर्म के सिद्धांत पर सामाजिक प्रबंध : ऋण वेद और शास्त्रों में समाज के चार वरणों का सिद्धांत मिलता है। मनुष्यों को ब्राहमण, क्षत्रीय, वैशय और शूद्र चार वरणों में बांटा गया है। ब्राहमणों का काम धर्म पुस्तकों की पाठ पूजा, यज्ञ करवाने और दान लेना है। क्षत्रियों का काम जंग युद्ध करना, विदेशी हमलवारों से जनता को बचाना है और राज्य करना है। वैशय, व्यापारी वर्ग को कहा गया है, और शूद्रों का कर्तव्य बाकी तीन वर्गो की निष्काम सेवा करना है। शूद्र वर्ग सब से नीचे वर्ग गिना जाता है। इनके साथ पशुओं से भी बुरा व्यवहार होता था। बाकी के तीन वर्गो के लोग इन को छूने से भी घबराते थे। अपने ऊपर इनकी परछाई भी नहीं पड़ने देते थे। इन अछूतों यानी शूद्रों के घर भी गांव के एक नुक्कड़ में होते थे। वरण भेद जन्म से ही मानी जाती है। इसने कई जातियों तथा उप जातियों को जन्म दिया। इस बारे में ऋग वेद में इस प्रकार लिखा गया है:

‘‘ जब उन (देवताओं) ने पुरुष को बांटा और उसके जितने भाग किये, उन्होंने उस के मुंह व

भुजाओं (बाजुओं) को क्या कहा ?उन्होंने उस के हाथों पैरों को क्या कहा ?ब्राहमण उस का मुंह था और उस की दोनों भुजाएं क्षत्रीय बनीं। उस की रानों से वैशय बने और पैरों से शूद्र पैदा हुए। (ऋग वेद : 10, 11, 12)

सिख सतगुरु साहिबान ने वर्णबांट का अपनी बाणी में खंडन किया है और सबको एक पंक्ति में ही लंगर सेवन करवाने व एक ही सरोवर में स्नान करवाने के व्यवहारिक साधनों का प्रयोग करके मनुष्यों को जात-पात के कुष्ठ से बचाने का परोपकार किया। दसम पातशाह ने सभी जातियों के स्त्री, पुरुष और बच्चों को एक बाटे में से अमृतपान करवा कर सिखों को जात पात के शिकंजे में से निकाला। गुरबाणी जात-पात के बारे में इस प्रकार अगवाई करती है :

- **जाणहु जोति न पूछहु जाती, अगै जाति न हे ।।** (आसा महला 1 पृष्ठ 341)

यथा

- **अगै जाति न जोरु है, अगै जीउ नवे ।।**

जिन की लेखै पति पवै चंगे सेई केइ ।। (वार आसा महला 1 पृष्ठ 461)

यथा

- **जाति जनमु नह पूछीऐ, सच घरु लेहु बताए ।।**

सा जाति सा पति है, जेहे करम कमाई ।। (प्रभाती महला 1 पृष्ठ 1330)

मनुष्यों को चार जातियों में बांटने की भांति ही, सनातम धर्म में मनुष्य के जीवन को भी चार भागों में बांटा गया है और उनके भिन्न-भिन्न कर्तव्य निश्चित किये गए हैं। ये चार भाग हैं : ब्रहमचर्य आश्रम, ग्रहस्थ आश्रम, वानप्रस्थ आश्रम और संन्यास आश्रम । **ब्रहमचर्य,** विवाहित जीवन से पहले का विद्या प्राप्ति का पड़ाव है। **ग्रहस्थ,** विवाहित जीवन में स्त्री तथा बाल बच्चे के साथ रहने का समय है। **वानप्रस्थ,** जंगलों में जा कर एकांतवास में तप साध कर, भिक्षा लेकर निर्वाह करने का विधान है। इस प्रकार मनुष्य के जीवन को लगभग सौ साल का निश्चित करके, उस के चार हिस्से कर दिए गए। इस को आश्रम धर्म कहलाते हैं।

गुरमति : गुरमत मनुष्य के जीवन के इस वर्ण भेद में विश्वास नहीं करती क्योंकि मनुष्य की आयु के बारे में कुछ कहा नहीं जा सकता। कई पैदा होते ही मर जाते हैं और कई जवानी में मर जाते हैं। कई वृद्धावस्था तक भी पहुंच जाते हैं। इस प्रकार आश्रम धर्म अपने आप ही रद्द हो जाता है। गुरमत के अनुसार तो जब भी मनुष्य होश संभाल ले उस को प्रभु की स्तुति गायन में लग जाना चाहिए - अमृतपान करके गुरू वाला बन जाना चाहिए। गृहस्थ मार्ग को गुरमत में प्रधानता दी गई है। गुरसिख अपने जीवन काल में बाल बच्चों में रहते हुए भी माया से निर्लिप्त रहता है। कारोबार करते हुए जहां वह अपना व बच्चों का भरण-पोषण करता है वहीं वह नाम का जाप करने और दूसरों का नाम का जाप करवाने का काम करता रहता है। वह सारे कर्तव्यों को साथ के साथ निभाता है।

(4) **मूर्ति पूजा :** सनातन धर्म में अलग-अलग कल्पित देवी देवताओं की मूर्तियों (पत्थरों व अन्य धातुओं की बना कर) उन की पूजा करने का विधान है। मूर्ति को नहलाना, टिक्का लगाना, फूलों से श्रृंगार, उसकी स्तुति में भजन गाने, उस के सम्मुख धूप जलाना व आरती उतारना, भोग लगाना आदि अनेकों कर्म इस पूजा में शामिल होते हैं।

गुरू साहिबान ने मूर्ति पूजा का जोरदार खंडन किया है। उनके कुछ विचार नीचे अंकित किये जाते हैं :

हिंदू मूले भूले अखुटी जाही ।। नारदि कहिआ सि पूज करांही ।।

अंध गुंगे अंध अंधारु ।। पाथरु ले पूजहि मुगध गवार ।।

ओहि जा आपि डुबे, तुम कहां तरणहारु ।। (बिहागड़ा महला 1)

यथा

– जो पाथर कउ कहते देव ।। तां की बिरथा होवै सेव ।।

जो पाथर की पाई पाइ ।। तिसकी घाल अजांई जाए ।।

ठाकुरु हमरा सद बोलंता ।। सरब जीआ कउ प्रभु दानु देता ।।

न पाथरु बोलै ना किछु देइ ।। फोकट करम निहफल है सेव ।। (भैरउ महला 5, पृष्ठ 1160)

– काहे को पूजत पाहन को कछ पाहन मैं मरमेसर नाहीं ।।

तांही को पूज प्रभु कर कै, जिह पूजत ही अघ ओघ मिटाहीं ।। (33 सवैये, पातशाही 10)

(5) **आवागवन का सिद्धांत :** कहा गया है कि मनुष्य मरने के पश्चात अपने किये कामों के अनुसार स्वर्गो या नर्को में जाता है। स्वर्गो में सुख, आराम और एशप्रस्ती के अनेकों साधनों की प्राप्ति होती है। नर्को में घोर यातनाएं दी जाती हैं। आत्मा का भिन्न-भिन्न योनियों में भंवर काटने का विचार भी दिया गया है।

गुरमति : आत्मा को अमर मानती है और आवागवन के सिद्धांत में विश्वास रखती है। **स्वर्ग, नर्क, शब्द गुरबाणी में प्रयोग तो किए गए हैं (पर नए अर्थो में) पर इन के अस्तित्व को स्वीकार नहीं किया गया।** गुरमति के अनुसार इस जीवन में नाम का जाप करने वाले व नेक काम करने वाले मनुष्यो की आत्मा मौत के पश्चात, प्रभु की आत्मा (परम आत्मा में वैसे ही समा जाती है, जैसे नदियां-नाले समुंद्र में समा जाते हैं। मंदकर्मी लोग अलग-अलग योनियों में डाल दिए जाते हैं और इस तरह वे पापों का फल भोगते हैं।

(6) **व्रत रखना :** सनातन धर्म में अनेकों ही व्रतों का विधान है। खास-खास दिनों को व्रत रखे जाते हैं- अन्न नहीं खाया जाता। इन से मानसिक शुद्धि होती है, ऐसा बताया गया है। महात्मा गांधी लंबे लंबे व्रत रखने के लिए मशहूर थे।

गुरमति व्रतों का खंडन करती है क्योंकि इन से न तो मन पवित्र होता है और न ही यह मनुष्य के आचरण को ऊंचा उठाने में सहायक होते हैं। हां, ये व्रत, बेकार का शरीरिक कष्ट जरूर देते हैं।

– अंन न खाहि, देही दुख दीजै ।।

बिनु गुर गिआन त्रिपति नहीं थीजै ।। (रामकली महला 1 पृष्ठ 105)

यथा

– बरत न रहउ, न मह रमदानां ।। तिस सेवी जो रखै निदाना ।।

(भैरउ महला 5, पृ. 1336)

यथा

– छोडडि अंनु, करहि पाखंड ।। ना सोहागनि ना ओहि रंड ।।

जग महि बकते दुधाधारी ।। गुपती खावहि वटिका सारी ।।

अंनै बिनां ना होइ सुकालु ।। तजिऐ अंनि न मिलै गुपालु ।। (गोंड कबीर जी, पृष्ठ 863)

(7) **मुक्ति के लिए तीर्थ – स्नान :** सनातनी धर्म में खास धार्मिक स्थनों पर नदियों के किनारे जा कर स्नान करने व दान करने को बहुत महत्व दिया गया है। कई नदियों को पवित्र माना गया है – जैसे गंगा और यमुना। कुछ विशेष तीर्थो पर (प्रयाग, पहोआ आदि) मृतक प्राणी के पिंड दान किये जाते हैं, हरिद्वार में (गंगा में) मृतकों की हड्डियां (फुल) डाली जाती हैं और मृतक के नाम पर दान किया जाता है। यह सब कुछ प्राणी के कल्याण के लिए किया जाता है। कांशी (वाराणसी/बनारस) में शरीर त्यागने से ही मुक्ति होती मानी गई है।

गुरमति ने सनातनी धर्म के तीर्थो संबंधी उपरोक्त व अन्य कई विश्वासों का भरसक खंडन किया है। इन को फोकट कर्म कहा गया है। वैसे हमारे सतगुरू भी कई तथाकथित तीर्थो पर गए थे। पर वे श्रद्धा भावना से नहीं थे गए, बल्कि कु – राहियों को राह पर डालने गए थे। गुरबाणी, तीर्थो संबंधी अपनी अगवाई इस प्रकार देती है:

– तीरथ नाइ व उतरसि मैल ।। करम धरम सभ हउमै फैल ।। (रामकली महला 5)

यथा

– मनि मैले सभु किछू मैला तनि धोतै मनु हछा न होइ ।। (वडहंस महला 3, पृ. 558)

यथा

– जल के मजनि जे गति होवै, नित नित मेंडुक नावहि ।।

जैसे मेंडुक तैसे ओइ नर, फिरि फिरि जोनी आवहि ।। (आसा कबीर जी, पृष्ठ 484)

गुरमति में गुरू की शिक्षा को ही तीर्थ कहा गया है। इस शिक्षा को मानना व उस पर अमल करना ही सिखों के लिए तीर्थ स्नान है :

– तीरथ पूरा सतिगुरू, जो अनदिन हरि हरि नाम धिआए ।। (वार माझ महला 4)

यथा

– तीरथ नावन जाउ, तीरथ नाम है।

तीरथ सबद बीचार, अंतरि गिआन है ।। (धनासरी महला 1)

(8) उपरोक्त प्रमुख विश्वासों के अतिरिक्त सनातन धर्म में सूतक (जन्म समय की अपवित्रता) पातक (मृत्यु के समय की अपवित्रता) चौंके (रसोई) की पवित्रता, चौके के आस-पास कार यानी लकीर निकालनी। भिट से बचने के लिए मुहूर्त निकालने, थित वार व शगुन की विचार करनी, मरे हुओं की पूजा करना, मृतक प्राणियों के नाम पर तीर्थो पर जा कर पिंड दान करने, श्राद्ध करने, देवताओं व प्राकृतिक शक्तियों को वश में करन के लिए मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए मंत्रों का जाप करना और यज्ञ करवाने, जनेऊ धारण करना, तिलक लगाना, माला फेरना, संस्कृत भाषा को देव भाषा मानकर सर्वोत्तम मानना, हर समय ब्राहमण की अगुवाई में रहना-उसको दान देना आदि अनेकों ही भ्रम, वहम व पाखंड प्रचलित हैं।

गुरमत इनमें से किसी एक से भी मेल नहीं खाती है। बल्कि सब का विरोध या खंडन करती है और ब्राहमणों द्वारा अपनी आजीविका के लिए बनाए इन भ्रम जालों में से निकलने की प्रेरणा देती है। ब्राहमणों

(इस विषय पर तथा अन्य सनातनी विश्वासों के कर्मकांडों के बारे में गुरमति की जानकारी प्राप्त करने के लिए कालेज का ट्रैक्ट 'न्यारा खालसा' पढ़ें (मूल्य 5/रू)

लॉन्च करता : जसबीर सिंघ
Mob. : 099881-60484, 62390-45985
Type Setting : Radheshyam Choudhary
Mob. : 098149- 66882